Daily Gospel Reflections in Hindi

30 July 2019

लूकस 19: 22-27

BE FAITHFUL IN A VERY LITTLE

अशर्फियों का दृष्टान्त हम संत मत्ती के सुसमाचार (Mt. 25:14-30) और संत लूकस के सुसमाचार में पाते है। दोनों में मुख्य संदेश एक ही है– हमें ईश्वर द्वारा प्रान्त वरदानों का सदुपयोग करना चाहिए।

लेकिन इस दृष्टान्त की पृष्टभूमि दोनों सुसमाचार में अलग है। संत मत्ती के सुसमाचार में प्रभु जहां दुनिया का अन्त और न्यायविधी के बारे में समझाते है, मंदिर के विनाश, महा विपत्तियों का आरंभ, चौकस रहने की जरूरत, न्याय के दिन का दृष्टान्त (Mt. Ch. 24,25) आदि समझाने के बीच अशर्फियों का दृष्टान्त सुनाते है। प्रभु कहना चाहते है कि न्याय के दिन सब को अपना लेखा देना पड़ेगा, सब को उस दिन अपने–अपने कर्मों का जवाब देना होगा।

लेकिन संत लूकस के सुसमाचार में पृष्टभूमि अलग है। दुनिया का अन्त चौकसी, न्याय के दिन आदि का जिक्र नहीं है। बदले, प्रभु येसु की, जेरुसालेम की ओर, अपनी अंतिम यात्रा चल रहीं है। प्रभु को इसका अहसास था लेकिन लोग समझ रहे थे कि प्रभु येसु जेरुसालेम पहुंचकर उनके द्वारा ''ईश्वर का राज्य तुरंत प्रकट होने वाला है'' (Lk. 19:11)। संत लूकस के अनुसार इस दृष्टान्त में राजनीति का जिक्र है। प्रभु येसु दृष्टान्त की भूमिका में एक कुलीन व्यक्ति के बारे में कहते है जो राजपद प्राप्त करने के उद्देश्य से दूर देश चला जाता है। हमें स्मरण होना चाहिए कि राजा हेरोद की मृत्यु के बाद अर्कलेऊस, रोम गया और रोमी सम्राट द्वारा राजा घोषित किया गया। साथ ही साथ यह भी संयोग से ऐतिहासिक है कि लोगों का एक शिष्टमण्डल भी रोम गया था कि अर्कलेऊस को राजा ना बनाने का निवेदन करें। लेकिन अर्कलेऊस राजा बन ही गया।

दृष्टान्त का राजनैतिक रुख के कारण, लोगों को पक्का विश्वास हो गया होगा कि प्रभु येसु येरुसालेम पहुंचकर तुरंत ही अपना ईश्वरीय राज्य की स्थापना करेंगे। लेकिन यह मात्र लोगों की सोच थी, रोमियों और यहूदी नेताओं से तंग जनता की एक अधूरी कामना मात्र थी। प्रभु येसु का इरादा और मकसद बिल्कुल अलग था। यह हमें संत लूकस के अगले अध्याय से मालूम होता है जहां प्रभु हिंसक असामियों का दृष्टांत सुनाते है (Lk. 20:9-16)।

प्रभु हमें समझाना चाहते है कि आज की कठिनाइयों का सामना कर, अगर हम ईश्वरीय कृपाओं का सदुपयोग करते है, प्रभु से उसका इनाम हमें मिलेगा। संत पौलुस कहते है – ''....जो महिमा प्रकट होने को है, उसकी तुलना में इस समय का दुःख नगण्य है'' (Rm. 8:18)। ''...हमारी क्षण भर की हल्की सी मुसीबत हमें हमेशा के लिए अपार महिमा दिलाती है' (2Cor. 4:17)। प्रभु को मालूम था कि येरुसालेम में उन्हें घोर पीड़ा सहकर मरना होगा। लेकिन वे आश्वस्त थे कि यहीं अन्त नहीं है। ''... मरण तक हाँ, क्रूस पर मरण तक, आज्ञाकारी बनकर अपने को और भी दीन बना लिया। इसलिए ईश्वर ने उन्हें महान बनाया और उनको वह नाम प्रदान किया, जो सब नामों में श्रेष्ठ है'' (Phil. 2:8,9)। इसलिए हमें हताश न होकर प्रयत्न करते रहना चाहिए। प्रभु अवश्य हमारी सुधी लेंगे।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019